प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/04

व्यवसायिक सूकर पालन
आय का साधन

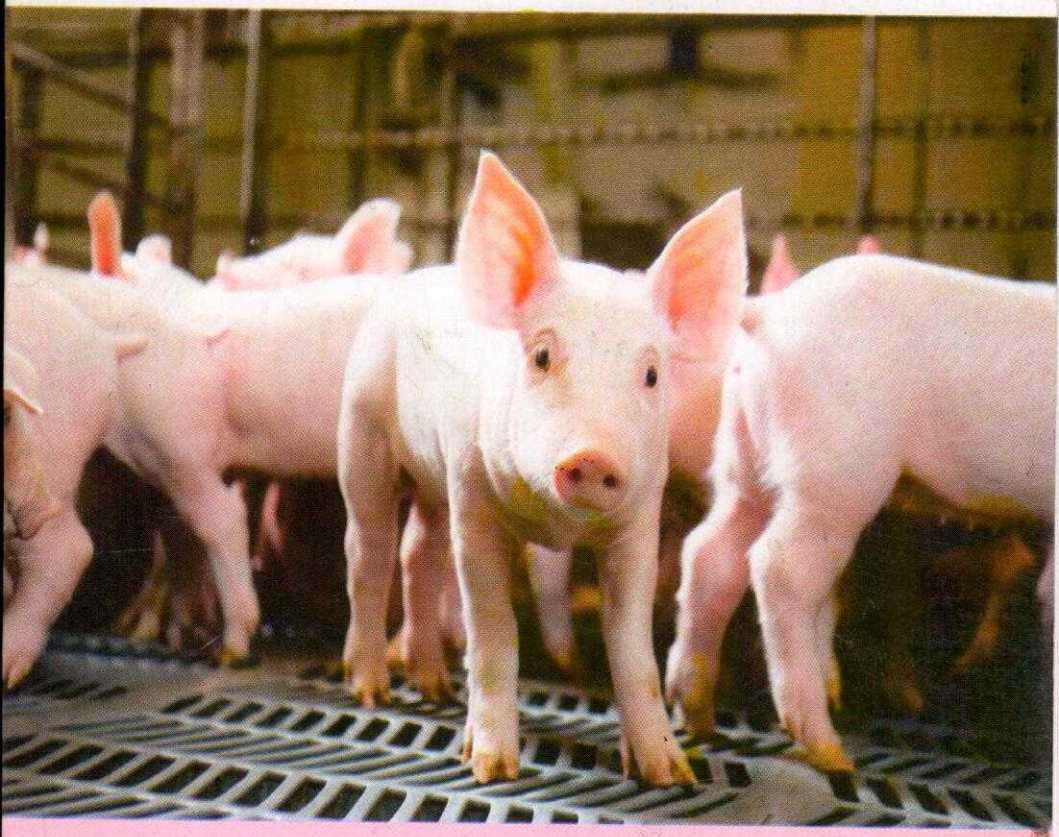

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

व्यवसायिक सूकर पालन

आय का साधन

देश में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा कम होती औसत कृषि योग्य भूमि के कारण पोषक व्यवस्था पर दिनों दिन दबाव बढ़ रहा हैं। अनाज से उपलब्ध न हो सकने वाले पोषक पदार्थो की कमी को मांस द्वारा पूरा किया जा रहा हैं। सूकर पालन मांस उत्पादन हेतू एक लाभकारी व्यवसाय हैं। इसके द्वारा बहुत कम समय में कृषि उत्पादों एवं खाद्य पदार्थो को खिलाकर ज्यादा मात्रा में उच्च कोटी के मांस का उत्पादन किया जा सकता हैं। दक्षिण–पूर्व एशिया, आस्ट्रेलिया, यूरोप आदि में सूकर पालन बड़े पैमाने पर किया जाता हैं। सीमांत और भूमिहीन किसानों की बढ़ती संख्या एवं सूकर पालन के वैज्ञानिक तरीकों के उपलब्ध होने के परिणाम स्वरूप सूकर पालन का महत्व एवं प्रचलन बढ़ता जा रहा हैं। सूकर पालन बहुत ही कम पूँजीनिवेश के साथ अधिक लाभकारी व्यवसाय हैं। इसमें कम जोखिम एवं कम लागत में अधिक आमदनी प्राप्त कि जा सकती है। सूअर से मॉस के साथ–साथ चमड़ा भी मिलता है इसका मॉस काफी पोशक तत्वों से युक्त होता है। इस व्यवसाय को और भी लाभप्रद बनाये रखने के लिए निम्न वैज्ञानिक बातों पर ध्यान देना आवश्यक हैं :–

आहार व्यवस्थाः सूकर उत्पादन पर होने वाले पुरे खर्चे का लगभग 80 प्रतिशत उसका पोषण आहार पर आता हैं।छौने सूकर को विशेष आहार देकर 8 सप्ताह के बदले 5–6 सप्ताह में भी अलग किया जा सकता हैं।उर्जा स्त्रोत के लिए सूकरों को मकई के बदले सस्ते दर में मडुआ या चावल की खुद्दी को भी खिलाया जा सकता हैं।दाना मिश्रण में 50 प्रतिशत मकई को इमली के बीज से बदला जा सकता हैं।दाना मिश्रण में 30 प्रतिशत तक मेहरा (चावल/मडुआ का फरमेंटेड वेस्ट) को मिलाया जा सकता हं। ग्रामिण स्तर पर मंहगे मछली चूर्ण या बादाम की खल्ली के बदले भुना हुआ सोयाबीन भी मिलाया जा सकता हैं। सूकरों को होटलों की जूठन सामग्री खिलाकर सूकर पालन में दाना मिश्रण पर होने वाले खर्च में कटोती कर सकते हैं। सूकरों को चराने की व्यवस्था करनी चाहिए। सूकरों को हरी घाँस तथा चारा खिलाकर दाना पर होने वाले खर्च में बचत की जा सकती हैं।सूकरों को कसावा/सेमलकन्द की जड़ तथा पत्ती भी खिलाया जा सकता हैं।उन्हें स्वच्छ ताजे पानी

की व्यवस्था भी प्रक्षेत्र में सुनिश्चित की जानी चाहिए जो उनके मांस वृद्वि लिए एक अनिवार्य घटक है।

शावको / छौनों की वैज्ञानिक तरीकें से देखभाल:

सूकर पालन व्यवसाय में अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं कि सूकरियों से एक वर्श में कम से कम दो बार बच्चे लिए जाने चाहिए एवं उसमें मृत्युदर निम्नतम रखी जाए। अतः आवश्यक हे कि गर्भकाल से ही बच्चों की समुचित देखभाल की जाये ताकि मृत्युदर को कम किया जा सके। अगर हमारे किसान भाई निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दे, तो शावकों से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं :–

- ☆ गर्भवती सूकरी को संतुलीत आहार उचित मात्रा में देना चाहिए।
- ☆ जन्म के तुरंत बाद नाक, कान, मुँह आँख आदि के उपर जो भी झिल्ली या म्युकस हो उसको तुरंत साफ करना चाहिए।
- ☆ भारीर से 2.5 सें0 मी0 की दूरी पर नाल नये ब्लेड से काटें तथा एन्टीसेप्टीक घोल लगाना चाहिए। बच्चों के जन्म के तुरंत बाद दाँत के नुकीले भाग को काटना आव यक है।
- ☆ जन्म के 1 घंटे के भीतर बच्चों को खीस पिलाना सूनि चत करें। इससे उनकी रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ती है।
- ☆ रक्तल्पता (अनिमिया) से बचाने के लिए बच्चों में जन्म के चौथे एवं चौदहवें दिन आयरन की सूई (एक मि0 ली0 माँस में) लगवाना चाहिए।
- ☆ चार सप्ताह की उम्र होने पर अनुपयोगी नर छौनों का बंध्याकरण कराना चाहिए।
- ☆ 6 – 8 सप्ताह की उम्र में मादा शावकों को माँ से अलग कर देना चाहिए।
- ☆ अलगाव के बाद बीमारी से बचाव के लिए बच्चों में ''स्वाइन फीवर'' एवं ''एफ. एम. डी'' का टीकाकरण अपने निकट के पशु चिकित्सालय से संपर्क कर करवाना चाहिए। यह संक्रामक रोगों से बचाता है।
- ☆ बीमार होने पर तुरंत पशुचिकित्सक से संपर्क कर दवा देंना चाहिए।
- ☆ सूकर के चर्म रोग के निदान के लिए निम्न घरेलू उपचार किया जा सकता हैं – करंज तेल 50 मि0 ली0, नीम का तेल 50 मि0 ली0, गन्धक 10 ग्राम, कपुर 10 ग्राम का मिश्रण बनाकर लगावें।
- ☆ सूकर ज्वर एवं खुरहा (खुरपका – मुँहपका) का टीका प्रति छः माह पर लगावाना आवश्यक है।
- ☆ खाने के समय पशुओं का निरीक्षण अवश्य करना चाहिए क्योंकि खाने के समय बीमार पशु की पहचान तुरंत की जा सकती है। सुस्त, एकान्त, अक्सर सोते रहना, बेचैन रहना इत्यादी बीमार पशुओं के प्रमुख लक्षण हैं। इस परस्थति में तुरंत पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।

किसानों को लाभदायक सूकर पालन के लिए निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए :–

सूकरों के लिए आवास की व्यवस्था में इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि व साफ सुथरे, हवादार एवं नमी रहीत हों। इससे जीवाणुओं, फूफंदो एवं अन्य बिमारीयों के संक्रमण की आशंका कम होती है।

- 4 – 6 सप्ताह में नर बच्चे का जिन्हें प्रजनन के लिए नहीं रखना है, उनका बधिया करा देना चाहिए।
- गर्भवती सूकरी को बच्चा देने के कम से कम 10 दिन पहले प्रसूति गृह में समूचित व्यवस्था के साथ रख देना चाहिए।
- बच्चा देने के बाद सूकरी झाल गिराती है, जिसे तत्काल प्रसूति गृह से निकाल देना चाहिए। क्योंकि यह संक्रामक होती है।
- नवजात की सफाई एवं खीस पीलाने की व्यवस्था जन्म के तुरंत बाद करना चाहिए।

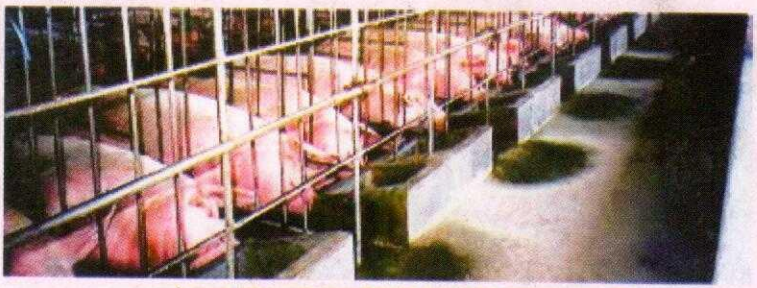

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- सरोज कुमार रजक, पंकज कुमार एवं पुष्पेन्द्र कुमार सिंह

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021